दैनिक जागरण

अपनी प्रसन्नता के निर्धारक आप स्वयं होते हैं

गैर जिम्मेदार ईरान

आखिरकार ईरान अपनी उस गलती को स्वीकार करने के लिए बाध्य हुआ जिससे वह इन्कार कर रहा था। निःसंदेह उसने ऐसा इसीलिए किया, क्योंकि इसके सुबूत सामने आने लगे थे कि यूक्रेन का यात्री विमान उसकी मिसाइल का ही निशाना बना। इस विमान में चालक दल के सदस्यों सहित 176 लोग सवार थे। इनमें से 80 से अधिक यात्री तो ईरान के ही थे। साफ है कि बदले की आग में जलते ईरान ने उन निर्दोष लोगों की बलि ले ली जिनका उसके और अमेरिका के बीच जारी टकराव से कहीं कोई लेना-देना नहीं था। यह मानवीय भूल नहीं अक्षम्य लापरवाही है। भले ही ईरान ने इस यात्री विमान को निशाना बनाए जाने के लिए माफी मांगी हो, लेकिन उसकी ओर से जिस तरह यह कहा गया कि यूक्रेन का विमान कथित तौर पर संवेदनशील क्षेत्र की ओर मुड़ रहा था उससे यही पता चलता है कि वह अपनी भीषण लापरवाही पर पर्दा डालने की कोशिश कर रहा है। इस कोशिश को बेनकाब किया जाना चाहिए ताकि यह स्पष्ट हो सके कि ईरान ने बेहद गैर जिम्मेदाराना हरकत को अंजाम दिया और फिर उसे मानवीय भूल के आवरण से ढकने में जुटा। इस तरह के स्पष्टीकरण को हास्यास्पद ही कहा जाएगा कि ईरानी सेना ने यात्री विमान को क्रूज मिसाइल समझ लिया।

आखिर जिस देश की सेना यात्री विमान और क्रूज मिसाइल में भेद करना न जानती हो उसे परमाणु हथियार से लैस होने की इजाजत कैसे दी जा सकती है? ईरान ने यात्री विमान को निशाना बनाकर तो यही रेखांकित किया कि वह परमाणु हथियार हासिल करने का हकदार बिल्कुल भी नहीं है। बेहतर हो कि ईरान की इस कथित मानवीय भूल का संज्ञान संयुक्त राष्ट्र भी ले। उसे न केवल ईरान को इस हादसे के लिए जवाबदेह बनाना होगा, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना होगा कि दुनिया के अशांत क्षेत्रों में इस तरह की गफलत न होने पाए। उड्डयन क्षेत्र के विशेषज्ञों ने ईरान से यह जो सवाल पूछा है कि आखिर जब वह इराक में अमेरिका के सैनिक ठिकानों पर मिसाइल हमले की तैयारी कर रहा था तो फिर उसने अपने हवाई क्षेत्र को प्रतिबंधित करना जरूरी क्यों नहीं समझा उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। किसी भी जिम्मेदार देश से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी सैन्य गतिविधियों को संचालित करते समय यात्री विमानों के सुरक्षित संचालन की चिंता करे और आवश्यक समझे तो उनकी उड़ान पर रोक लगा दे। चूंकि ईरान ने यह बुनियादी काम नहीं किया इसलिए 176 लोग जान से हाथ धो बैठे। इस त्रासदी के बाद यह जरूरी है कि दुनिया भर की एयरलाइंस और अधिक सतर्क हो जाएं।

चिंताजनक संकेत

भले ही हिमाचल प्रदेश भौगोलिक रूप से छोटा राज्य है, लेकिन बहादुरी में यह देश के लिए मिसाल है। गर्व की बात है कि यहां के चार जांबाजों को सेना का सर्वोच्च सम्मान परमवीर चक्र मिला है। इसके अलावा सेना के अन्य सम्मान भी यहां के जांबाज समय-समय पर हासिल करते रहे हैं। भारतीय सैन्य अकादमी में भी प्रदेश के युवा अपनी प्रतिभा का बेहतर प्रदर्शन कर सेना की विभिन्न इकाइयों में सेवाएं दे रहे हैं। यह देश प्रेम का जज्बा ही है कि जब प्रदेश में कहीं भी सेना की भर्ती होती है तो युवाओं की भीड़ उमड़ पड़ती है। सेना में अफसर ही नहीं सिपाही देने में भी हिमाचल हमेशा अग्रणी रहा है। हिमाचल के प्रत्येक गांव और हर दूसरे घर से जवान सेना में सेवाएं दे रहा है, लेकिन अब चिंता यह है कि पहाड़ के युवा मैदान में हांफने लगे हैं। ऊना में जारी भर्ती रैली में भी सामने आया है कि भर्ती होने आए युवाओं में से सिर्फ दस फीसद ही मैदान की परीक्षा पास कर पाए हैं यानी दौड़ में ही हांफ गए।

सेना की भर्ती रैली में सामने आया है कि दस फीसद युवा ही दौड़ में तय लक्ष्य हासिल कर पा रहे हैं, यह चिंता के साथ संभलने का मौका इसलिए है, क्योंकि इससे सबक लेकर स्थिति को सुधारा जा सकता है

इसका एक कारण सही खानपान न होना तो है ही, लेकिन बढ़ती नशाखोरी भी बड़ा कारण है। युवाओं के दमखम में आई कमी की एक वजह खेल गतिविधियों में शामिल न होना और मोबाइल इत्यादि में खोया रहना भी है। एक दौर था जब खेत-खलिहानों में भी युवा खेलते देखे जाते थे, लेकिन अब अधिकतर युवा बंद कमरों में इंटरनेट में ही व्यस्त रहते हैं। यह भी सही है कि प्रदेश में सेना भर्ती के लिए कोचिंग सेंटर के अलावा शहरों व कस्बों में जिम भी खोले गए हैं। सरकारी स्तर पर भी बच्चों को सशक्त बनाने के लिए खेलों व शारीरिक विकास के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, लेकिन पुलिस, वन विभाग व सेना की भर्ती में युवाओं का मैदान टेस्ट पास न कर पाना गंभीर मामला है। यह बात सभी को समझनी होगी कि युवा ही कल का भविष्य हैं। अगर ये स्वस्थ व सशक्त होंगे, तभी राष्ट्र मजबूत हो सकेगा। मजबूत व सशक्त युवाओं के लिए समाज के हर वर्ग की जिम्मेदारी है। सबसे जरूरी है कि युवाओं को गलत राह पर जाने से रोका जाए। नशे के खिलाफ प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक होना होगा। सरकारी स्तर पर प्रयास भी तभी सफल होंगे, जब सभी लोग इसके खिलाफ एकजुट होंगे। उम्मीद की जानी चाहिए कि इस मामले में प्रत्येक स्तर पर गंभीरता देखने को मिलेगी। एकजुट प्रयासों से ही इसमें सफलता सुनिश्चित हो सकेगी।

बेजा विरोध से मजबूत होती मोदी सरकार

संजय गुप्त

विपक्ष को इसका आभास हो तो बेहतर कि मोदी सरकार अपने एजेंडे को पूरा करने के लिए संकल्पबद्ध है और अतार्किक विरोध उसे फायदा ही पहुंचा रहा है

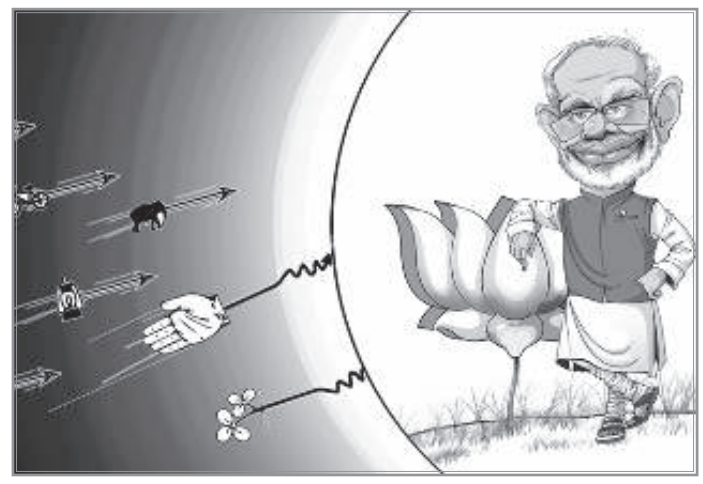

अवधेश राजपूत

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में नकाब पहने लोगों ने जिस तरह छात्रों को लाठी-डंडों से पीटा और तोड़फोड़ की उसकी जितनी भी निंदा-भर्त्सना की जाए, कम है। इन नकाबपोश हमलावरों की पहचान करके उन्हें सख्त सजा दी जानी चाहिए। सजा के हकदार वे छात्र भी हैं जो करीब तीन महीनों से विश्वविद्यालय में पठन-पाठन बाधित किए हुए थे और अपनी मांगें मनवाने के लिए हिंसा का सहारा भी ले रहे थे। इन छात्रों ने नए छात्रों का रजिस्ट्रेशन रोकने के लिए विश्वविद्यालय के सर्वर रूप में जाकर जिस तरह तोड़फोड़ की उसे भी गुंडागर्दी के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता। किसी भी विश्वविद्यालय में कोई भी विवाद हो उसे हिंसा के जरिये सुलझाने की कोशिश करना अतिवादी कृत्य है। इस अतिवाद से केवल वैमनस्य ही बढ़ेगा और समस्याएं और अधिक विकराल होंगी। गांधी और आंबेडकर के देश में विश्वविद्यालय परिसर में हिंसक घटनाएं होना खतरनाक है। दिल्ली पुलिस ने अपनी प्रारंभिक जांच में हिंसा करने वाले करीब दस छात्रों की पहचान की है। इनमें दोनों यानी वाम और दक्षिणपंथी गुट के छात्र हैं। एक नाम छात्रसंघ की अध्यक्ष का भी है। इस पर हैरानी नहीं कि जेएनयू हिंसा की भी वैसी ही मनमानी व्याख्या की जा रही है जैसी नागरिकता संशोधन कानून को लेकर की जा रही है। इसमें संदेह है कि विपक्ष के ऐसे आचरण से मोदी सरकार की सेहत पर कोई असर पड़ने वाला है। वैसे भी उसका एजेंडा साफ है और उसके तहत वह देश की पुरानी समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध है। विपक्ष को इसका आभास हो तो बेहतर कि दूसरे कार्यकाल में मोदी सरकार अपने एजेंडे को पूरा करने के लिए कहीं अधिक संकल्पबद्ध है और उसका बेजा विरोध उसे फायदा ही पहुंचा रहा है।

इस कानून के खिलाफ खड़े राजनीतिक दलों ने सरकार विरोध के अपने अभियान में जिस तरह जेएनयू हिंसा को भी भुनाना शुरू कर दिया है उससे यदि कुछ साफ हो रहा तो यही कि उन्हें मोदी सरकार के विरोध का कोई न कोई बहाना चाहिए। यदि ऐसे राजनीतिक और साथ ही गैर राजनीतिक तत्व यह समझ रहे हैं कि अपने अतार्किक विरोध से वे मोदी सरकार को दबाव में ले आएंगे तो इसका मतलब यही है कि उन्हें इसका भान ही नहीं कि यह सरकार अपने एजेंडे से इस तरह पीछे हटने वाली नहीं है। इसका प्रमाण केवल यही नहीं कि उसने तमाम विरोध को दरकिनार कर विगत दिवस नागरिकता संशोधन कानून को अधिसूचित कर दिया, बल्कि यह भी है कि उसने तीन तलाक विधेयक को कानून का रूप देने के अपने संकल्प को पूरा किया और कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के असंभव लक्ष्य को भी पूरा किया। साफ है कि विपक्षी दल या तो मोदी और शाह के इरादों से अनजान हैं या फिर यह समझने से इन्कार कर रहे कि राष्ट्रीय महत्व के मसलों पर उनका अनावश्यक विरोध कर वह उन्हें ही राजनीतिक रूप से मजबूत करने का काम कर रहे हैं।

जहां तक जेएनयू की बात है, यह विश्वविद्यालय अपनी विशिष्ट वामपंथी संस्कृति के लिए जाना जाता है। यहां वामपंथी संस्कृति को पोषण इसलिए मिला, क्योंकि वामपंथियों को खुश करने के लिए ही प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। चूंकि इस विश्वविद्यालय में वामपंथी विचारकों को चुन-चुनकर रखा गया इसलिए वह वामपंथ का अड्डा बन गया। यह उस दौर में हुआ जब भारत तत्कालीन सोवियत संघ के पाले में दिखता था। चूंकि इंदिरा गांधी ने जेएनयू के जरिये वामपंथियों के मन की मुराद पूरी की इसलिए आपातकाल के दौरान उन्होंने भी उनका साथ दिया। चूंकि जेएनयू में वामपंथी सोच-विचार को संरक्षित करने का सिलसिला दशकों तक कायम रहा इसलिए वाम दलों और छात्र संगठनों ने इस विश्वविद्यालय को अपनी निजी जागीर मान लिया। एक समय कांग्रेसी छात्र संगठन वामपंथी छात्र संगठनों को चुनौती देता था, लेकिन जैसे ही कांग्रेस और वामपंथी दलों के बीच वैचारिक दूरी घटी, कांग्रेसी छात्र संगठन ने अपने हथियार डाल दिए। बीते कुछ समय से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद वामपंथी छात्र संगठनों को चुनौती देने की कोशिश कर रहा है। इसे वामपंथी छात्र संगठन सहन नहीं कर पा रहे हैं।

2014 में नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद वामपंथी छात्र संगठन और अधिक बेचैन एवं उग्र हो गए। मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में एम जगदीश कुमार जेएनयू के कुलपति बने। चूंकि वह न तो वामपंथी खेमे के थे और वाम पृष्ठभूमि वाले इसलिए पहले दिन से उनका विरोध शुरू हो गया। तीन महीने पहले जब जेएनयू की फीस बढ़ाई गई तो उसका उग्र विरोध शुरू हो गया। हालांकि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बढ़ी फीस में कटौती कर दी, फिर भी वामपंथी छात्र संगठनों ने धरना-प्रदर्शन जारी रखा। इस धरना प्रदर्शन के दौरान विभिन्न विभागों में ताले डाले गए और शिक्षकों को पढ़ाने से जबरन रोका गया। इतना ही नहीं स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनादर किया गया और कुलपति पर हमला करने की कोशिश की गई। हैरानी यह रही कि किसी ने भी इस मनमानी और अभद्रता की आलोचना करना जरूरी नहीं समझा। जाहिर है कि इसीलिए नहीं समझा, क्योंकि जेएनयू नागरिकता संशोधन कानून के विरोध का भी अड्डा बना हुआ था।

यह पहली बार नहीं है जब जेएनयू अप्रिय कारणों से चर्चा में आया हो। इसके पहले वह तब चर्चा में आया था जब 2016 में वहां संसद पर हमले के दोषी आतंकी अफजल गुरु के समर्थन में भारत तेरे टुकड़े होंगे...जैसे भद्दे नारे लगे थे। आज भले ही विपक्षी दल और वामपंथी बुद्धिजीवी और मीडिया का एक हिस्सा जेएनयू में हिंसा के लिए सरकार को जिम्मेदार ठहरा रहा हो, लेकिन आखिर जब नागरिकता कानून को लेकर उसका विरोध पहले से जारी हो तब फिर वह ऐसा कोई काम क्यों करेगी जिससे उसकी समस्या और बढ़े? क्या इससे उसे कोई राजनीतिक लाभ मिलने वाला है? बेहतर होगा कि सरकार यह स्पष्ट करने में संकोच न करे कि वह किसी दबाव में आए बिना यह सुनिश्चित करेगी कि जेएनयू का संचालन सही तरीके से हो और वहां पठन-पाठन का उचित माहौल बने। मोदी सरकार दबाव में न झुकने और नामुमकिन को मुमकिन करने के लिए जानी जाती है। इस बार भी उसे दबाव में नहीं आना चाहिए। उसे विपक्षी दलों की ओर से फैलाई जा रही तमाम नकारात्मकता के बाद भी उन मसलों को सुलझाने के लिए आगे बढ़ते रहने के अपने इरादे रेखांकित करते रहने चाहिए जिन्हें हल करने के लिए लोगों ने उसे भारी बहुमत से दोबारा चुना है।

response@jagran.com

लोकप्रिय पुस्तक का विमोचन

हास्य-व्यंग्य

संतोष त्रिवेदी

गुरुजी को विमोचन का इतना अभ्यास था कि किसी भी किताब को देखते ही उनके 'कर-कमल' फड़फड़ाने लगते

पुस्तक मेले में घुसते ही 'वह' दिखाई दिए। मैं कन्नी काटकर निकलना चाहता था, पर उन्होंने मुझे पकड़ ही लिया और पन्नी में लिपटी अपनी किताब पकड़ा दी। फिर फुसफुसाते हुए बोले, 'अब आए हो तो विमोचन करके ही जाओ। तुम मेरे आत्मीय हो। आपदा में अपने ही याद आते हैं।' मैंने भी अनमने ढंग से कहा, 'कोई वरिष्ठ नहीं मिला क्या? मैं तो आपसे कितना छोटा हूं।' मेरी बात को 'इग्नोर' करते हुए उन्होंने लंबी आह भरी। बोले कि 'बात यह है कि इस वक्त सीजन बड़ा 'टाइट' चल रहा है। 'कर-कमलों' वाले सभी वरिष्ठ एडवांस में 'बुक' हैं। कोई भी 'डेट' खाली नहीं है। बमुश्किल कल एक पेशेवर विमोचक ने हामी भरी थी, परंतु तेरहवीं पुस्तक लोकार्पित करते-करते वह स्वयं इस लोक से 'वॉक-आउट' होने से बचे।

किताब के बारे में वह यह रहस्योद्घाटन भी कर गए कि इसमें लिखी गई कविताएं बिल्कुल पानी के बताशे की तरह हैं। जुबान में पड़ते ही घुल जाती हैं। साहित्य में यथार्थ के प्रयोग का इससे बेहतर उदाहरण फिलहाल नहीं मिलता। फिर क्या था, प्रकाशक ने इतना सुनते ही उनका गला पकड़ लिया और लेखक ने माथा। बड़ी मुश्किल से उन्हें सुरक्षित गले के साथ प्रशंसकों की भीड़ से बाहर निकाला गया। अच्छी बात यह हुई कि लेखक ने वहीं पर अपनी 56वीं पुस्तक आने की घोषणा कर दी। तब जाकर प्रकाशक संतुष्ट हुआ, लेकिन साहित्य तभी से सदमे में है।' मैं अब कोई जोखिम नहीं लेना चाहता। उस 'विमोचन-कांड' से मैंने यही सीखा है। हालांकि दो-तीन बंदों को हमने 'बुक' किया हुआ है, पर बतौर 'बैक-अप' तुम्हें चुन रहा हूं। तुम भले ही वरिष्ठ नहीं हो, पर यह बात भीड़ नहीं जानती। तुम बस मेरे बारे में यह पढ़ देना। यह कहकर उन्होंने मुझे एक पर्ची थमा दी। मैंने उसे चुपचाप जेब में रख लिया और आगे बढ़ने लगा।

बड़े जतन से मुझे संभालते हुए वह घटना-स्थल तक ले गए। तीन चेहरे पहले से ही वहां कैंची लिए तैनात थे। इनमें एक पैदाइशी विमोचक थे और बाकी दोनों उनके चेले। गुरुजी को विमोचन का इतना अभ्यास था कि किसी भी किताब को देखते ही उनके 'कर-कमल' फड़फड़ाने लगते। मेले में यदि किसी दिन वह कोई विमोचन नहीं कर पाते तो उनका शुगर-लेवल बढ़ जाता। इधर किताब में बंधा फीता कटने के लिए तड़प रहा था। जैसे ही चार लोग इकट्ठे हो गए, मुक्ति पाने के लिए पुस्तक तैयार थी। मैंने बिना देरी किए कैंची चला दी। इस बीच अनुभवी विमोचक ने सही पैकेट पर वार किया। कई मोबाइल एक साथ चमक उठे। इस तरह किताब की मुंह दिखाई संपन्न हुई। अब विमोचित किताब पर मेरा मुंह खुलने का समय हो गया। मैंने जेब टटोली, पर पर्ची नदारद थी। फिर किताब को दो बार उलट-पुलट कर पूरी तरह 'स्कैन' कर लिया। खैर, इसके बाद मेरा वक्तव्य शुरू हो गया, 'मित्रों, कवि ने बिल्कुल नई जमीन पकड़ी है। इसके शीर्षक से ही क्रांति झलकती है। कवि गहन अंधकार में भी आशा का दामन नहीं छोड़ता। वह सुराख जैसी सुरंग में आकाश जैसी स्वच्छंदता की कल्पना करता है। मैं चाहता हूं कि आप लोग स्थापित कवियों को दरकिनार कर इस कवि पर गौर करें। साहित्य में प्रयोगवाद की आज से शुरुआत हो रही है।'

मैं आगे कुछ और बोलता, तभी भीड़ में से भी किसी ने 'प्रयोग' कर दिया। मेज के नीचे रखी समोसे की टोकरी पता नहीं किसने ऊपर रख दी! अचानक सभी साहित्य-प्रेमी समोसों पर टूट पड़े। जैसे-तैसे मेरे हाथ भी एक समोसा लगा पर विमोचित पुस्तक गायब मिली। समोसे और साहित्य दोनों एक साथ निपट रहे थे। दस मिनट की अफरा-तफरी के बाद पुस्तक-लेखक और प्रकाशक पाठकों के इस अप्रत्याशित हमले का जायजा ले रहे थे। मैंने धीरे से लेखक महोदय से पूछा 'कुछ ज्यादा नुकसान हो गया क्या?' अब लेखक जी चौंक पड़े। बोले 'अरे नहीं मित्र, किताब 'हिट' हो गई है। समोसे तीस ही थे, जबकि किताबें पूरी पचास।। मतलब अपनी किताब समोसों से ज्यादा बिकी। तुम्हारा आभारी रहूंगा जीवन भर।' मैं संकोच सहित उस 'आभार' को लेकर मेले से बाहर निकल आया।

response@jagran.com

ऊर्जा

जीवन मंथन

सनातन धर्म में वर्णित सागर मंथन की कथा हर युग में प्रासंगिक है। इसमें देवताओं ने अमृत और राक्षसों ने विष प्राप्त किया था। यह अमृत और विष मनुष्य अपनी प्रवृत्ति से पाता है। इस प्रसंग में स्वयं भगवान द्वारा राक्षसों को विष/मदिरा देने का तात्पर्य है कि कर्मों के अनुसार ईश्वर उसे नकारात्मक प्रवृत्ति के रूप में यह पिलाते हैं। यह नकारात्मक प्रवृत्ति ही राक्षस रूप है जो मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार प्राप्त करता है तथा अपने कर्मों की मदिरा पीकर अपना विनाश करता है। सागर मंथन की कथा में अपने आचरण को धर्म के अनुसार रखने वाला मनुष्य सम योग की स्थिति में रहकर सदैव परमपिता से जुड़कर अमृत रूपी शांति तथा परम आनंद का अनुभव करता है।

प्रत्येक मनुष्य कर्मों के अनुसार अपनी मनोवृति एवं फल पाता है। पाप कर्मों में लिप्त मनुष्य अपने कर्मों के अपराध बोध के कारण अशांत रहता है। इसलिए उसमें नकारात्मक भाव जागृत होकर उसे तरह-तरह की व्याधियां घेर लेती हैं। वहीं धर्म मार्ग पर चलने वाला मनुष्य कर्मों के अनुरूप सकारात्मक स्थिति से आनंद की अनुभूति करता है। इसलिए अपराधबोध से ग्रस्त मनुष्य संसार को नकारात्मक भाव एवं अशांति में ही छोड़ता है जबकि धर्म मार्ग पर चलकर सम स्थिति को प्राप्त मनुष्य परम शांति की स्थिति में परमानंद में बिना मानसिक कष्ट के विलीन हो जाता है और नए जन्म में जीव अपने पुराने कर्मों के अनुसार अपनी मनोवृत्ति प्राप्त करता है।

मानव जीवन रूपी सागर मंथन की यह सबसे बड़ी मणियां मोती उसे प्राप्त हो जाती हैं। अंतिम क्षणों में अक्सर प्रत्येक मनुष्य इस तत्व को महसूस करता है कि मैंने जीवन रूपी समुद्र मंथन में नकारात्मक कर्मरूपी मदिरा क्यों चुनी? वह स्वयं आप को अत्यंत असहाय महसूस करता है जबकि सत्कर्म के मार्ग पर चलने वाले मनुष्य को परम शांति की अनुभूति होती है। मनुष्य को इस अटल सत्य को समझ कर जीवन रूपी सागर मंथन में अमृत की ही खोज करनी चाहिए।

कर्नल शिवदान सिंह

तथ्य-कथ्य | जंगल की आग

(हाल में लगी आग से प्रभावित क्षेत्र, आंकड़ा लाख एकड़ में)

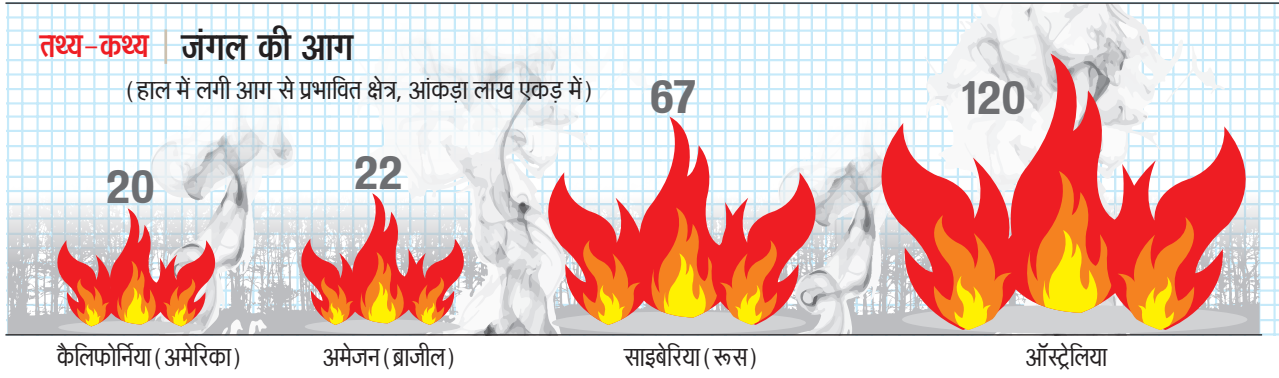

कैलिफोर्निया (अमेरिका) | अमेजन (ब्राजील) | साइबेरिया (रूस) | ऑस्ट्रेलिया

जलवायु परिवर्तन से उपजा खतरा

मुकुल व्यास

कार्बन डाईऑक्साइड की सामान्य से अधिक मात्रा बच्चों में सोचने-समझने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है

वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड के स्तर में वृद्धि से बच्चों की बौद्धिक क्षमता पर असर पड़ सकता है। अमेरिका के कोलोराडो विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने इसके प्रमाण जुटाए हैं। उनके अनुसार वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड के बढ़ते हुए स्तर से भविष्य में बच्चों की सोचने-समझने की क्षमता कमजोर पड़ सकती है। इससे पहले हुए अध्ययनों में भी यह बात उभरकर आई थी कि कार्बन डाईऑक्साइड की सामान्य से अधिक मात्रा बच्चों की सोचने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है।

अब शोधकर्ताओं ने यह पता लगाने की कोशिश की है कि वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड का बढ़ा हुआ स्तर एक कक्षा के भीतर बच्चे के ज्ञानार्जन को किस प्रकार प्रभावित करता है। पिछले अध्ययनों से पता चला था कि प्रदूषण से बच्चों के कारण सीखने-समझने में दिक्कत आती है, लेकिन स्वच्छ हवा के लिए खिड़कियों को खोलने से यह समस्या काफी हद तक दूर की जा सकती है। इस नए अध्ययन में शोधकर्ताओं ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया है कि जब हवा में सामान्य से अधिक कार्बन डाईऑक्साइड होगी तो क्या होगा?

इसे जानने के लिए उन्होंने एक मॉडल में दो परिदृश्यों की कल्पना की। पहले परिदृश्य में मनुष्य वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड के उत्सर्जन में कटौती करता है और दूसरे परिदृश्य में कोई कटौती नहीं करता। शोधकर्ताओं ने पाया कि पहले परिदृश्य में बच्चों की सीखने और समझने की क्षमता में वर्ष 2100 तक 25 प्रतिशत की कमी आएगी, क्योंकि उत्सर्जन में कमी के बावजूद छात्रों को सामान्य से अधिक कार्बन डाईऑक्साइड झेलनी पड़ेगी। कार्बन डाईऑक्साइड के उत्सर्जन में कोई कटौती न होने वाले दूसरे परिदृश्य में बच्चों की बौद्धिक क्षमता 50 प्रतिशत तक कम होने की आशंका है। शोधकर्ताओं का कहना है कि सामान्य से अधिक मात्रा में कार्बन डाईऑक्साइड से युक्त हवा के प्रभावों के बारे में यह पहला अध्ययन है। उन्होंने कहा कि उत्सर्जन खत्म करके इस समस्या से निपटा जा सकता है।

इस बीच, कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन को घटाने के लिए कार्बन भंडारण की सीसीएस (कार्बन कैप्चर एंड स्टोरेज) तकनीक अपनाने के सुझाव दिए गए हैं। अभी दुनिया में सिर्फ दो दर्जन सीसीएस प्रोजेक्ट शुरू हो पाए हैं। इसकी वजह उच्च लागत के साथ-साथ तकनीक की उपयोगिता के बारे में अनिश्चितता भी है, लेकिन शोधकर्ताओं का कहना है कि बहुत कम समय में चट्टानों में कार्बन डाईऑक्साइड के भंडारण के लिए कुएं (इंजेक्शन वेल) निर्मित किए जा सकते हैं। इससे आइपीसीसी द्वारा निर्धारित लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। आइपीसीसी ने दुनिया में सीसीएस टेक्नोलॉजी के जरिये वर्ष 2050 तक कार्बन उत्सर्जन में 13 प्रतिशत कटौती का लक्ष्य रखा है। अब देखना यह होगा कि दुनिया इस लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में कितने प्रयास करती है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

राजरंग

'काम' के बदले समर्थन

केंद्र सरकार ने जबसे रेलवे में कैडर मर्जर का फैसला किया है तबसे इसके समर्थक और विरोधियों के बीच तलवारें खिंची हुई हैं। जहां अधिकांश यूनियनों ने इस फैसले के खिलाफ आवाज उठाने का निर्णय किया है, वहीं अफसरों की एक दोयम दर्जे की यूनियन इसके समर्थन में भी उतर आई है। यह अलग बात है कि यह समर्थन किस तरह से हासिल किया गया और आगे इसकी क्या स्थिति होगी, इसे लेकर रेल भवन में तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं। जहां कुछ लोगों का कहना है कि अब तक उपेक्षित यूनियन के पदाधिकारियों को विशेष अधिकार दिए जाने का वादा किया गया है। वहीं कुछ अन्य लोग मानते हैं कि भंग किए जाने के भय से यूनियन को समर्थन का एलान करना पड़ा है। चर्चा तो यहां तक है कि सरकार से चुनिंदा काम कराने के बाद यूनियन पलटी मार सकती है। इस बात के संकेत यूनियन के एक पदाधिकारी ने दूसरी बड़ी यूनियन के नेता से मुलाकात में दिए। पदाधिकारी ने कहा कि 'अभी हमें सरकार से कुछ काम करवाने हैं। इसके बाद हम भी आपके साथ खड़े नजर आएंगे।'

शुभ मुहूर्त का इंतजार

राम मंदिर निर्माण की जिम्मेदारी संभालने वाले ट्रस्ट का मसौदा बनकर तैयार हो गया है। बस केवल शुभ मुहूर्त का इंतजार किया जा रहा है। बताया जाता है कि अयोध्या डेस्क से जुड़े गृह मंत्रालय के दो वरिष्ठ अधिकारी चुपचाप अयोध्या का दौरा भी कर आए हैं जहां उन्होंने इस आंदोलन से जुड़े वरिष्ठ धार्मिक नेताओं से विचार-विमर्श किया है। वैसे तो कहा तो यह भी जा रहा है कि ये लोग ट्रस्ट के मसौदे पर मुहर लगाने गए थे ताकि बाद में कोई विवाद खड़ा न हो। माना जा रहा है कि मकर संक्राति के बाद कभी भी ट्रस्ट की घोषणा की जा सकती है। वैसे तो सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार सरकार के पास नौ फरवरी तक समय है, लेकिन सरकार तब-तक इंतजार करने के मूड में नहीं है।

दलालों के दलाल

रेलवे में टिकट दलालों के रैकेट को तोड़ने के कई प्रयास हुए, मगर कभी निर्णायक कामयाबी नहीं मिली। अब मौजूदा सरकार भी इसके लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रही है। इसके लिए अगले सप्ताह देशव्यापी अभियान छेड़ा जा रहा है, लेकिन अभियान से पहले ही इस मुहिम के फेल होने की भविष्यवाणियां की जाने लगी हैं। रेलवे के एक अधिकारी ने इसकी वजह भी बता दी। अधिकारी का कहना था कि जिस आरपीएफ को अभियान की कमान सौंपी गई है, उसके क्षत्रपों ने दलाल विरोधी अभियानों को ही कमाई का जरिया बना लिया है। इसके लिए सभी डिवीजनों में आरपीएफ के अधिकारियों ने बाकायदा इलाके बांट रखे हैं। अभियान के नाम पर प्रत्येक इलाके का प्रभारी बड़े दलालों से मोटी उगाही कर लेता है। इसके बाद अभियान के नाम पर छोटे-मोटे दलालों को पकड़कर तस्वीरें खिंचवा कर मीडिया में वाहवाही लूटी जाती है। आरपीएफ के उत्साही महानिदेशक को इसकी जानकारी नहीं है। यदि उन्हें वास्तव में दलालों पर अंकुश लगाना है तो पहले आरपीएफ के भीतर मौजूद इन 'दलालों के दलालों' की गर्दन पकड़नी चाहिए।

बजट पर टिकी निगाहें

जैसे-जैसे बजट की तारीख नजदीक आ रही है, वैसे-वैसे उद्योग जगत में चिंताएं गहराती जा रही हैं। भले ही कॉरपोरेट टैक्स में कटौती के जरिये इंडिया इंक को भारी भरकम राहत मिली है, लेकिन अर्थव्यवस्था में मांग की कमी से उसके हाथ-पांव फूले हुए हैं। उद्योगपति अपनी निजी राय से लेकर उद्योग चैंबरों तक बातचीत में मान रहे हैं कि बजट में मांग बढ़ाने के ठोस उपाय नहीं हुए तो भविष्य का संकट बढ़ सकता है। दबी जुबान से उद्योग जगत के लोग बजट बनाने वाली टीम की काबिलियत पर भी सवाल उठा रहे हैं। कॉरपोरेट सेक्टर से जुड़े कई लोग तो यह भी कह रहे हैं कि मंत्रालय में जो लोग बजट पर उद्योग जगत से चर्चा कर रहे हैं उनके हाथ में निर्णय लेने की कितनी ताकत है, अभी यह भी स्पष्ट नहीं है। इसलिए एक फरवरी के इंतजार में सब 'फिंगर क्रॉस' की मुद्रा में हैं।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।